रात्रि क्लास 15/11/68 ओमशांति शिवबाबा याद है?
जब कोई मूँझते हैं तो बाबा पास भेजते हैं। तो बाबा लिख देते हैं मन्मनाभव। जो बात नहीं समझते हो आगे चल समझ जावेंगे। उस खिट-पिट में न पड़ो। सभी बातों को छोड़ बाप की याद में लग जाओ। 84 का चक्र भी समझाया है। बाप खुद कहते हैं मामेकं याद करो। फिर कृष्ण कहते हैं वा भगवान कहते हैं, वह समझने की बात है। मामेकं याद करो तो पाप कट जावेंगे। यह तो निश्चय है। बाकी कृष्ण भगवान नहीं है, यह रोला तो सारी दुनिया में है। बाप ने समझाया है ज्ञान मार्ग। भक्ति में हार और ज्ञान में जीत है। भक्ति में है ही गिरने का। ज्ञान में चढ़ने का है। यह भी काफी बात है समझने की। ज्ञान को नॉलेज कहा जाता है। पढ़ाई शास्त्रों की भी है, पढ़ाई यह भी है जो बाप पढ़ाते हैं। शास्त्रों की पढ़ाई में एम ऑबजेक्ट नहीं है। और सभी पढ़ाई में एम ऑबजेक्ट है। यह भी शिक्षा है मनुष्य से देवता बनना। तुम समझा सकते हो यह है पाठशाला। गीता पाठशाला में ही भगवान खुद कहते हैं मैं राजयोग सिखाता हूँ। यह है रूहानी नॉलेज। वह है जिस्मानी नॉलेज। रूहानी बाप रूहानी नॉलेज बच्चों को देते हैं। यह भी बुद्धि में बैठना कितना मुश्किल होता है। वह जिस्मानी बाप, यह रूहानी बाप। इनमें यह खूबी है जो बाप बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। इनको पवित्र भी बनाना है, नई दुनिया में भी ले जाना है। वर्सा भी मिलता है। बाप, टीचर, गुरु तीनों एक ही है। टीचर शिक्षा बैठ देते हैं, ऐसा कोई दूसरा हो नहीं सकता। बाप ज्ञान देंगे तो भी मनुष्य तन में ही आवेंगे ना। और कोई बाप, टीचर, गुरु एक ही हो नहीं सकता। गाया भी जाता है त्वमेव माताश्च पिता..... विद्या कौन-सी देते हैं? और सभी जिस्मानी विद्या देते हैं। एक ही रूहानी बाप रूहानी विद्या देते हैं, इन बातों का कोई मनुष्य मात्र को पता नहीं है। कह देते हैं भगवान का नाम-रूप, देश-काल है नहीं। इसलिए तुम कोई को समझाते हो तो डिबेट बहुत करते हैं। जो बाप, टीचर, गुरु है वह फिर सर्वव्यापी कैसे हो सकता? उनका नाम-रूप एक ही चला आता है। ऐसे नहीं एक टीचर छोड़ दूसरा पढ़ावेंगे। नहीं। ऐसे भी नहीं। एक गुरु मर जावेगा, तुम फिर दूसरा करेंगे? नहीं। वह टीचर भी मर जाते हैं। बाप भी मर जाते हैं। गुरु भी मर जाते हैं। यह तो अमर कथा सुनाने वाला अमर बाबा है। बाबा बाप भी है, टीचर भी, सद्गुरु भी है। यह बीज डाल देना चाहिए। यह समझाने में वण्डर भी लगता है। और कोई को तो बाप, टीचर, गुरु नहीं कहेंगे। अच्छी रीत विचार करना है, यह ठीक है। भूलते तो नहीं। विचार ज़रूर चलेगी। यह प्वाइंट्स समझाते थे तो बहुत अच्छा। बहुतों को भूल जाती है। पढ़ाई कोई भी हालत में छोड़नी नहीं है। भल समझ... एक ही बात रोज़ मुरली में आते हैं। बाप भी एक ही बात कहते हैं मन्मनाभव। यह तो रोज़ समझाते हैं। बाकी बीच-बीच में नई-नई प्वाइंट्स सुनाते ज़रूर हैं। जिससे सभी को रेसपांड मिल जाता है। बाप और वर्से को याद करो। बाप का बनने से वर्सा ज़रूर मिलता है। 84 का चक्र जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। पूछने का भी कुछ रहता नहीं है। बच्चे यहाँ आते हैं, बेहद के बाप के बनते हैं, तो देह भी भूल जाते हैं। बाप को याद करते-करते सभी पाप भस्म हो जाते हैं। भक्ति मार्ग में मनुष्यों को आदत पड़ गई है। कृष्ण को, राम को कितना याद करते हैं। भिन्न-भिन्न नाम-रूप में याद करते हैं। अम्बा के कितने चित्र आदि बना दिये हैं। इसलिए आधा कल्प के मूँझे हुये हैं। जहाँ जावे फिर भी उल्टा भक्ति मार्ग में चला जावें। बाप आकर सभी को रास्ता बताते हैं। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

यह है चैतन्य फूलों का बगीचा। जैसे बाप के दिल में यह ख्याल आता है मैं बड़ा बेहद का बाप हूँ इन बेहद के बच्चों का, बेहद का बागवान हूँ इन चैतन्य फलों(फूलों) के बगी(चे) का। तो सबसे पहले नज़र उनपर पड़ती है जो दूसरों को भी आप समान खुशबुएँदार फूल बनाने का पुरुषार्थ करते हैं। बनावेंगे वही जो खुद फूल होंगे। तो अपने दिल में समझना है मैं किस प्रकार का फूल हूँ। बाप के दिल पसंद हूँ या बाप की नज़र से दूर रहने वाला अक का फूल हूँ। हरेक अपन को समझ तो सकते हैं ना।